P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सामान्य एवं अस्थि विकलांग विद्यार्थियों में नैराश्य का तुलनात्मक अध्ययन

अतुल कुमार मिश्र
शोध छात्र,
लो0 शि0 एवं जनसंचार विभाग,
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट, सतना, म0प्र0, भारत

नन्द लाल मिश्र
उपाचार्य,
ग्रा0 वि0 एवं व्या0 प्रबन्धन विभाग,
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट, सतना (म0प्र0)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में सामान्य एवं अस्थि विकलांग विद्यार्थियों के नैराश्य का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में न्यायदर्श के रूप में 40 सामान्य एवं 40 अस्थि विकलांग के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। विद्यार्थियों के नैराश्य ज्ञात करने हेतु शोधकर्ता द्वारा प्रो0 एन0 एस0 चौहान एवं डॉ गोविन्द तिवारी द्वारा निर्मित प्रमापीकृत उपकरण नैराश्य मापा प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है तथा प्राप्तांको का विश्लेषण क्रान्तिक अनुपात की मदद से किया गया है। अध्ययन के अनुसार सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में अस्थि विकलांग विद्यार्थियों में नैराश्य का स्तर उच्च है।

मुख्य शब्द : सामान्य विद्यार्थी, अस्थि विकलांग विद्यार्थी एवं नैराश्य।

प्रस्तावना

समाज का विकास उसमें निहित सम्पूर्ण मानवीय संसाधनो का कुशलपूर्वक दोहन पर निर्भर करता है। समाज के सभी वर्ग के सहयोग के बिना पूर्ण विकास सम्भव नहीं हो सकता है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र या समाज के उर्ध्वगामी विकास का सबसे महत्वपूर्ण कारक है भारत में विकलांग लोगो की संख्या अधिक है और इनके विकास के बिना देश का पूर्ण विकास सम्भव नहीं है। भारत में विकलांग लोगों के लिए शिक्षा का इतिहास एक बदलते स्वरूप में उभरता हुआ दिखाई देता है। ऐसी स्थिति में शिक्षकों को एक कक्ष में एक साथ पढने वाले इन वैयक्तिक भिन्नता के सभी बालकों की शिक्षा की उपयुक्त व्यवस्था करने में योग्य होना आवश्यक है। शारीरिक रूप से विकलांग बालकों को जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में समायोजन करने में कठिनाई केवल शारीरिक अंगो के दोष के कारण उठानी पड़ती हैं। अनेकों अनुसंधानों में यह पाया गया है कि जब दोषपूर्ण अंगो की गम्भीरता अधिक होती है तब बालकों में हीनता की भावना विकसित हो जाती है। शारीरिक विभिन्नता के कारण ऐसे बालकों में नैराश्य उत्पन्न हो जाता है। नैराश्यता के कारण उनमें शैक्षिक पिछड़ापन एवं हीन भावना आ जाती है जिससे वह समाज में उच्च निष्पत्ति करने में सफल नहीं होते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व एवं व्यवहार उसके शैक्षिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, पारिवारिक, भौगोलिक वातावरण के द्वारा प्रभावित होता है। यदि यह प्रभाव सकारात्मक रूप मे प्राप्त होता है, तो विकास भी गतिशील रहता है; परन्तु इसमें नकारात्मक प्रभाव होने पर व्यक्ति के विकास तथा सामंजस्य में बाधा आ जाती है। अस्थि विकलांग विद्यार्थियों के नैराश्य को दूर करने में विद्यालय की अहम भूमिका रहती है। इस प्रकार शिक्षक विद्यार्थियों के लिए एक आन्तरिक प्रेरणा का कार्य करते हैं। चूँकि नैराश्य एक अर्जित कारक है। इसीलिए वह सदैव सभी के लिए एक समान नहीं रहता हैं क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति भिन्न है इसीलिए उसका नैराश्य भी अलग–अलग होगा। यदि अस्थि विकलांगता बालक को नकारात्मक रूप से प्रभावित करे, तो उसके व्यवहार एवं व्यक्तित्व में नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह अध्ययन शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा कि वह यह जानेगा कि छात्र के विद्यालयी वातावरण, सामाजिक वातावरण, पारिवारिक वातावरण के प्रति उसका नैराश्य कैसा है? ताकि उन्हें विशेष विधियों से लाभान्वित कर सकें। यह अध्ययन अभिभावकों के लिए भी लाभदायक होगा। छात्रों के नैराश्य में किस प्रकार से शैक्षिक, सामाजिक एवं व्यवहारिक वातावरण उसे किस प्रकार प्रभावित करता है। यह शोध प्रपत्र समाज के अन्य वर्गों तथा शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। समाज में अस्थि विकलांग बालकों के प्रति उनका दृष्टिकोण में बदलाव आयेगा। यह शोध प्रपत्र शोधकर्ताओं के अध्ययन के लिए एक आधार प्राप्त कराने में सिद्ध होगा।

शोध प्रश्न

सामान्य एवं अस्थि विकलांग विद्यार्थियों की तुलनात्मक स्थिति क्या है?

अध्ययन के उद्देश्य

सामान्य एवं अस्थि विकलांग विद्यार्थियों के नैराश्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

सामान्य एवं अस्थि विकलांग विद्यार्थियों के नैराश्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध अध्ययन भिण्ड शहर के शासकीय एवं अशासकीय कॉलेजों में अध्यनरत सामान्य एवं अस्थि विकलांग के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

समिष्ट

इस अध्ययन हेतु मध्य प्रदेश राज्य के जिला भिण्ड शहर के समस्त शासकीय एवं अशासकीय कॉलेजों में अध्ययनरत् विद्यार्थी, इस अध्ययन की समिष्ट है।

प्रतिदर्श एवं प्रतिचयन विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रतिदर्श चयन दो चरणों में पूर्ण किया गया–

1. शोधकर्ता द्वारा मध्य प्रदेश के जिला भिण्ड में 112 कॉलेजों में से प्रतिदर्शन की साधारण यादृच्छीकृत प्रतिदर्शन विधि का प्रयोग कर 04 शासकीय एवं 04 अशासकीय कॉलेजों का चयन किया गया।
2. तत्पश्चात चयनित 04 शासकीय एवं 04 अशासकीय कॉलेजों से सम्भावित प्रतिदर्शन की साधारण यादृच्छीकृत प्रतिदर्श चयन विधि के माध्यम से 40 सामान्य एवं 40 अस्थि विकलांग विद्यार्थियों का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में नैराश्य ज्ञात करने हेतु शोधकर्ता द्वारा प्रो0 एन0 एस0 चौहान एवं डॉ गोविन्द तिवारी द्वारा निर्मित प्रमापीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

उपकरण से प्राप्त प्राप्तांको को विभिन्न तालिकाओं में व्यवस्थित कर उनका विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात की गणना द्वारा किया गया है तथा दण्ड आरेख के द्वारा आकड़ों को प्रदर्शित किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या

उपकरणों द्वारा प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण कर परिणामों की व्याख्या निम्नलिखित है–

तालिका सं0 01

सामान्य एवं अस्थि विकलांग विद्यार्थियों के मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात का मान

नैराश्य	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	.05 सार्थकता स्तर, df=198 पर निष्कर्ष
सामान्य विद्यार्थी	40	43.88	5.48	2.29	सार्थक (अस्वीकृत)
अस्थि विकलांग विद्यार्थी	40	40.96	5.98		

***** 0.05 सार्थकता स्तर पर "CR" का सारणी मान = 1.96

परिणाम की व्याख्या

उपरोक्त परिणाम प्रदर्शित करते हैं कि सामान्य विद्यार्थियों का मध्यमान 43.88 तथा अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों का मध्यमान 40.96 है जो यह दर्शाता है कि सामान्य एवं अस्थि विकलांग विद्यार्थियों में विशेष अन्तर है। दोनों ही श्रेणी के विद्यार्थी नैराश्य की दृष्टि से असमान है। सामान्य विद्यार्थियों का मानक विचलन 5.48 एवं अस्थि विकलांग विद्यार्थियों का मानक विचलन 5.98 आया है। जबकि क्रांतिक अनुपात की गणना करने से यह 2.28 प्राप्त हुआ। यह प्राप्त मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी मान से अधिक है। यह प्राप्त मान 0.05 सार्थकता के स्तर पर सार्थक है। इस प्रकार से उपर्युक्त परिकल्पना अस्वीकृत हुई।

परिणाम का विवेचना

उपर्युक्त परिकल्पना में अन्तर आने का कारण यह है कि अस्थि विकलांग विद्यार्थियों में अपनी शारीरिक विकलांगता के कारण समाज एवं विद्यालय मे उचित समायोजन करने में परेशानी होती है साथ ही अस्थि विकलांग विद्यार्थियों के लिए बैठने की, उचित शिक्षण सहायक सामग्री की एवं शौचालय की समुचित व्यवस्था नहीं होती है, जिस कारण उनमें हीन भावना पैदा होती है। यह हीन भावना समाज द्वारा प्रदत्त उनके प्रति अति संवेदनशील एवं नकारात्मक माहौल के कारण होती है। समाज अभी भी अस्थि विकलांग विद्यार्थियों को सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा दया दृष्टि भाव से एवं उन्हें कमतर आँकता है। इससे उनमें नैराश्य की भावना जन्म ले लेती हैं। इस कारण इनमें सामान्य बालकों की अपेक्षा नैराश्य उच्च पाया जाता है।

ग्राफ संख्या 01
सामान्य तथा अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मसम्प्रत्यय के मापन का ग्राफीय प्रदर्शन

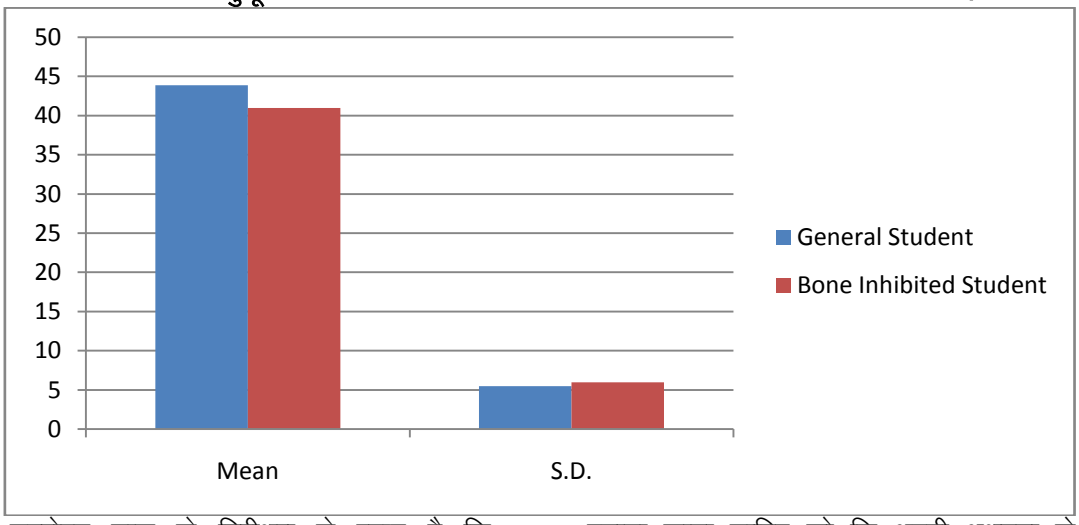

उपरोक्त ग्राफ के निरीक्षण से स्पष्ट है कि सामान्य तथा अस्थिबाधित विद्यार्थियों के नैराश्य के परीक्षण प्राप्तांक का मध्यमान 43.88 व 40.96 तथा मानक विचलन 5.48 व 5.98 है।

निष्कर्ष

सामान्य तथा अस्थिबाधित विद्यार्थियों के नैराश्य का अध्ययन करने पर पाया गया कि सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा अस्थिबाधित विद्यार्थियों में नैराश्य उच्च स्तर का है।

शैक्षिक निहितार्थ

अभिभावकों को अपने अस्थि विकलांग बच्चों को अति सुरक्षित महसूस नहीं कराना चाहिए। यदि वह ऐसा करते हैं तो उनके बच्चे उन पर आश्रित हो जायेंगे जिससे उनमें कुसमायोजित होने की संभावना अधिक रहेगी, इसका प्रभाव उनके नैराश्य पर पड़ेगा। इस समस्या के निजात के लिए कुशल परामर्श दाता एवं निर्देशक की आवश्यकता होती है। विशिष्ट शिक्षा के संस्थानों को अस्थिबाधित विद्यार्थियों के अभिभावकों में जागरुकता लाने के लिए विशेष कार्यशालाओं का आयोजन करना चाहिए कि वह अपने बच्चों की अक्षमता से सम्बन्धित आने वाली नवीनतम तकनीकी तथा उसकी प्रगति के बारे में जानकारी रखें। विशेष शिक्षा के क्षेत्र से सम्बन्धित अध्यापकों के लिए सबसे ज्यादा जरुरी उनको बच्चे की अक्षमता के बजाय उसकी क्षमता में दृढ़ विश्वास पैदा करें तथा वह बच्चों के साथ धैर्य पूर्वक व्यवहार करें, जिससे कि उनमें आत्म विश्वास आयेगा। सरकार को अपनी आधारभूत संरचना को और अधिक बेहतर बनाना चाहिए। निगरानी करने वाली समितियों को अपने कर्तव्यों को निर्वहन तथा दोषियों के खिलाफ कार्यवाही करने हेतु और अधिक स्वतंत्रता प्रदान की जानी चाहिए। गैर सरकारी संगठनों को आम नागरिकों के बीच जागृति (जागरुकता) को बढ़ावा देना चाहिए। साहित्य तथा नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से ऐसे अक्षम लोगों के जीवन के बारे में लोगों को बताया जाना चाहिए जो कि अपनी अक्षमता के बाबजूद बेहतर जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. *Jadhav, J. B. & Waghmare, S. L. (2018), Frustration among employed and Unemployed girls student. The International Journal of Indian Psychology, 6(1).147-154.*
2. *Jain, K. & Kakkar, N. (2014), Frustration among the secondary school students in relation to their emotional maturity: a study. Bhartiyam International Journal of Education & Research, 3(2), 1-10. Retrieved from http://gangainstituteofeducation.com/NewDocs/Frustration Among.pdf on 19/12/2015.*
3. *Jangira, N.K. (1986), Special Education in Britania and India, Gurgaon, Academic Press.*
4. *Khare, P. S. (2014). A comparative study of frustration level among science and non-science students. IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS), 19(10), 57-61. Retrieved from http://iosrjournals.org/iosr-jhss/papers/Vol19-issue10/Version-7/J0191075761.pdf on 09/12/2015.*
5. *Kohali, K. & Bajpai, G. S. (2006). A comparative study of frustration, depression and deprivation amongst trainee and serving Police officials. Indian Journal of Criminology and Criminalistics, 27(3), Retrievedfrom http://www.forensic.to/webhome/drgsbajpai/fruskal.pdf on 02/05/2013.*
6. *Kumari, U. & Kaur, R. (2016). Study of frustration among school teachers in relation to organizational role stress. EPRA International Journal of Research and Development (IJRD), 1(3), 60-64. Retrieved fromhttp://eprajournals.com/jpanel/upload/1255am_12.DR%20UMESH%20KUMARI%20-1.5.16.pdf 07/12/2016.*